मन की आंखों से पाया मुकाम

अंतर्मन से किया बाधाओं का मुकाबला

महिलाओं के लिए मिसाल बनीं प्रीती मोंगा

महत्वपूर्ण उपलब्धियां

केंद्र सरकार द्वारा राष्ट्रीय पुरस्कार : सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी (नेत्रहीन)	
मानव सेवा अवार्ड	1995
वोकेशनल सर्विस अवार्ड	1996
नीलम के. कांगा अवार्ड	1996
इनर फेम अवार्ड	1999
रेड एंड व्हाइट ब्रेवरी अवार्ड	1999

अंकुर शुक्ला
नई दिल्ली

हाथों की लकीरों पर यकीन मत करना, तकदीर तो उनकी भी होती है जिनके हाथ नहीं होते। चुनौतियों का सामना करने के लिए जुनून का होना जरूरी है। प्रीती मोंगा दृष्टिहीन हैं। महज छह वर्ष की थीं, जब जिंदगी की चुनौती से पहली बार रूबरू हुई। प्रधानाध्यापक ने उन्हें केवल इसलिए स्कूल से निकाल दिया, क्योंकि वह अपने होमवर्क को ठीक तरीके से पूरा नहीं कर पाती थीं। इसके बाद सितार वादन का भी प्रशिक्षण लिया और कुछ खास करने की चाहत में सात-आठ घंटों का रियाज भी करती थीं, लेकिन स्वर ज्ञान में कमजोर रहने के कारण उनका यह सफर भी अधूरा ही रह गया। इसके बाद भी हौसलों पर असर नहीं पड़ा। लगतार संघर्ष करती हुईं प्रीती आज उन ऊंचाईयों को छूने में कामयाब है, जो किसी भी दृष्टिहीन और महिला के लिए प्रेरणा से कम नहीं।

ऐसा रहा सफर

प्रीति का जन्म 22 अप्रैल 1959 में अमृतसर में हुआ था। पिता चरणजीत सिंह केंद्र सरकार में इंजीनियर थे। महज 21 माह की उम्र में टीकाकरण के बाद हुई एलर्जी के बाद धीरे-धीरे प्रीति की आंखों की रोशनी जाती रही। इसके बाद पिता का तबादला हुआ और वह परिवार के साथ दिल्ली के राजेंद्र नगर इलाके में रहने लगीं। चुनौतियों को झेलते हुए प्रीति ने वर्ष 1982 में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय के जरिये दसवीं की पढ़ाई पूरी की। इसके बाद प्रेम विवाह के बाद भी दुर्भाग्य ने साथ नहीं छोड़ा। प्रीति को महसूस हुआ कि उनके जीवन का अहम फैसला गलत है। प्रीति के दो बच्चे भी हैं। जीवन में इतना तनाव था कि कई बार निराशा ने घेरने की कोशिश की, लेकिन ऐसे वक्त में परिजनों के सहयोग और उनकी प्रेरणा से उन्हें हौसला मिला। इसके बाद उन्होंने एरोबिक्स अनुदेशक का प्रशिक्षण लेने का फैसला किया। इस फैसले के बाद किसी कारणवश प्रशिक्षक के रवैये ने भी उन्हें निराश किया, लेकिन इरादा अटल था। वह एरोबिक्स प्रशिक्षक बीना मर्चेंट के खिलाफ धरने पर बैठ गईं। इसके बाद प्रशिक्षण का दौर तो शुरू हो गया, लेकिन काफी मुसीबतों को झेलने के बाद ही उन्हें कामयाबी मिली। इसके बाद आर्थिक हालातों से संघर्ष करते हुए अचार कंपनी में बतौर मार्केटिंग हेड काम करने लगीं। बाद में उसी कंपनी की मार्केटिंग हेड बन गईं। इसके अलावा उन्होंने 10 वर्षों तक ऑफ आई अस्पताल में भी नौकरी की। बाद में भाई के साथ मिलकर एक कंपनी खोली। उनकी कंपनी मार्केटिंग सोल्यूशन, डेटा क्लिनिंग सहित कई अन्य कार्यों से जुड़ी हुई है। वह अपनी और कुछ अन्य कंपनियों के सहयोग से लगातार विकलांगों की मदद के लिए संघर्षरत हैं।

सामाजिक भूमिका

प्रीति आज आज बहुमुखी प्रतिभा की धनी हैं। वह मयूर विहार फेज दो में रहती है। सिल्वर लाइनिंग्स स्वयंसेवी संस्था की संस्थापक होने के साथ-साथ वह सिल्वर लाइनिंग्स सिनर्जिज प्राइवेट लिमिटेड की निदेशक भी हैं। इसके अलावा वह ट्रामा परामर्शदाता, कॉरपोरेट प्रशिक्षक, लेखक, एरोबिक्स प्रशिक्षक और कुशल सार्वजनिक प्रवक्ता भी हैं। मोंगा एरोबिक्स अनुदेशक का प्रशिक्षण पूरा करने वाली प्रथम भारतीय दृष्टिबाधित महिला है। वह विशेष और दृष्टिहीन लोगों के समान अधिकारों के लिए लंबे समय संघर्ष कर रही हैं। साथ ही नेशनल फेडरेशन ऑफ ब्लाइंड, नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड व ऑल इंडिया फेडरेशन ऑफ ब्लाइंड में भी अपनी सेवा दे रही हैं।

> विपरीत परिस्थितियों का मुकाबला बेचारगी या लाचारी से नहीं की जाती है। इसके लिए हौसले को हथियार बनाया जाना जरूरी है। यह भी सही है कि कई बार मन निराशा से भर जाता है, लेकिन ऐसे वक्त में धैर्य रखकर लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना चाहिए। परेशानी दिल से महसूस की जाती है। आंखों से देखकर भी कोई नजरअंदाज करता, तो कोई सिर्फ महसूस कर ही चुनौतियों का सामना करने में जुट जाता है। **-प्रीती मोंगा**

डीयू की जलपरी मीनाक्षी

अपने पिता और गुरु वीके पाहूजा के साथ मीनाक्षी पाहूजा।

कड़ा संघर्ष जरूरी

मीनाक्षी बताती हैं कि हर सफलता के पीछे कड़ा संघर्ष होता है। एक प्रतियोगिता की तैयारी के लिए 10 घंटे पानी में अभ्यास के लिए रहना पड़ता है। पूरी एकाग्रता के साथ हम प्रतियोगिता की तैयारी करते हैं। मैं अपनी छात्राओं को भी यह सिखाती हूं कि लक्ष्य कितना भी बड़ा क्यों न हो, लेकिन वह हमारे साहस से बड़ा नहीं हो सकता। हम यह मानकर कोई काम करने से इन्कार नहीं कर सकती हैं कि हम महिलाएं हैं। महिलाएं किसी भी हालत में कमजोर नहीं है, यह बात आए दिन महिलाएं साबित कर रही हैं। जरूरत है अपना लक्ष्य चुनकर उस पर चलने की उसके लिए प्रयास करने की।

अभिनव उपाध्याय
नई दिल्ली

दिल्ली विश्व विद्यालय (डीयू) में जलपरी के नाम से चर्चित मीनाक्षी पाहूजा को तैरने का शौक बचपन से रहा है। डीयू में फिजिकल एजुकेशन की प्राध्यापिका मीनाक्षी मानती हैं कि महिलाओं को खेल में आना समाज में आसानी से स्वीकार नहीं है, लेकिन साहस हो तो महिलाएं किसी भी क्षेत्र में अपना झंडा गाड़ सकती हैं।

महज 9 साल की उम्र में राष्ट्रीय स्तर पर तैराकी का पुरस्कार जीत चुकी मीनाक्षी अपनी कामयाबी का श्रेय माता- पिता को देती है। कहती हैं कि पिता से ही मैंने तैराकी सीखी। मेरे पिता वीके पाहूजा ने वर्ष 1963 में वाटर पोलो और तैराकी में एशिया स्तर पर तैराकी की थी। वही मेरे कोच रहे। मीनाक्षी बताती हैं कि माता-पिता ने हमेशा मुझे तैराकी के लिए प्रोत्साहित किया। इसी कारण एशिया पैसेफिक कोरिया में मैं भारत से गई करीब 50 लोगों की टीम में मुझे कांस्य पदक मिला। यह मेरा हौसला बढ़ाने वाला था।लेडी श्री राम कॉलेज में फिजिकल एजुकेशन की प्राध्यापिका मीनाक्षी स्वयं डीयू के इंद्रप्रस्थ कॉलेज से पढ़ाई की है। वह बताती हैं कि जब कोरिया में तैराकी की प्रतियोगिता जीती तो मैं बीए द्वितीय वर्ष में थी। वह बताती हैं कि जब मैंने तैरना शुरू किया था तब लड़कियों को कहा जाता था कि जो करना हो करो, लेकिन शादी करने के बाद। लेकिन मैंने पहले अपना लक्ष्य तय करना उचित समझा। कई अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में हिस्सा ले चुकी मीनाक्षी का फ्लोरिडा, मलेशिया सहित अन्य देशों में बेहतर तैराकी के लिए लिम्का बुक आफ वर्ल्ड रिकार्ड में भी नाम दर्ज हो चुका है।

वह बताती हैं कि देश के लिए खेलने का जज्बा हमें बार-बार एक नई चुनौती से लड़ने के लिए प्रेरित करता है। मैं आज भी देश विदेश की विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेती हूं। इंग्लिश चैनल पार करना मेरा सपना है। इसके लिए मैंने 2008 में और 2014 में कोशिश की थी, लेकिन बहुत कम समय से मैं इसमें पिछड़ गई। फिर भी मैं इस हौसले के साथ आगे बढ़ रही हूं कि मैं यह चैनल पार कर लूंगी।

महिलाओं को सशक्त बनाने में जुटीं विनीता

लायनेस द्वारा द्वारका जिले की अध्यक्ष विनीता छाबड़ा।

संतोष शर्मा
पश्चिमी दिल्ली

मन में यदि समाज के प्रति कुछ कर गुजरने का जज्बा हो तो कोई अड़चन आड़े नहीं आती और रास्ते खुद ब खुद बन जाते हैं। हम बात कर रहे हैं द्वारका सेक्टर-10 निवासी विनीता छाबड़ा की। वे कई वर्ष से महिला सशक्तीकरण और बेटी बचाओ अभियान से जुड़ी हैं। वे महिला सशक्तीकरण पर कार्यक्रम आयोजित करने के साथ ही सैकड़ों गरीब महिलाओं को रोजगार के लिए सिलाई मशीन व कपड़े बांट चुकी हैं। बुजुर्ग लोगों व लावारिस बच्चों के लिए भी उन्होंने कई कार्यक्रम चलाए। महिला जागरूकता व समाजसेवा के क्षेत्र में सराहनीय कार्य के कारण उन्हें लायनेस के अलावा अन्य कई संस्थाओं से राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सम्मान भी मिल चुका है। विनीता छाबड़ा का जन्म दिल्ली में हुआ था। उनके पिता आयकर अधिकारी थे। उनके पिता का ज्यादा समय उत्तर प्रदेश में बीता। लिहाजा, उनकी उच्चतर माध्यमिक व कालेज की पढ़ाई उत्तर प्रदेश के अलग-अलग शहरों में हुई है। उन्होंने इतिहास व हिंदी से परास्नातक कर रखा है। उनकी शादी मर्चेंट नेवी में तैनात कैप्टन आरके छाबड़ा से हुई। इस समय उनके दो बेटे हैं। नेवी में कार्यरत होने के कारण उनके पति आरके छाबड़ा की ड्यूटी पानी के जहाज में होती थी। बच्चे भी बड़े हो गए थे। विनीता बताती हैं कि खाली समय बर्बाद न कर वे सन् 1999 में लायनेस क्लब से जुड़ गईं। सक्रियता, लगन व कड़ी मेहनत के कारण के कारण क्लब में उन्हें महत्वपूर्ण पद प्रदान किया गया।

इसके बाद उन्होंने कभी भी पीछे मुड़कर नहीं देखा। द्वारका जिले की लायनेस क्लब में इस समय 25 महिलाओं की टीम है। विनीता बताती हैं कि उन्होंने महिला सशक्तीकरण व बेटी बचाने पर जोर दिया। उन्होंने कई कार्यशालाओं का भी आयोजन किया। गरीब बेसहारा महिलाओं को रोजगार दिलाने के लिए उनके बीच सिलाई मशीनें बंटवाई गईं। बेटियों के बचाने के प्रति जागरूकता के लिए आयोजित कार रैली में में 150 कारों पर लगाए गए बेटी बचाओ पोस्टर से लोगों से सशक्त संवाद दिए गए।

वृद्ध लोगों व लावारिस बच्चों के लिए भी समर्पित

विनीता छाबड़ा वृद्ध लोगों व गरीब बच्चों के प्रति भी खासी संवेदना रखती हैं। समय-समय पर अनाथाश्रम में रह रहे वृद्ध लोगों के मनोरंजन के लिए जहां कवि सम्मेलन व होली मिलन जैसे कार्यक्रम आयोजन किए जाते हैं, वहीं गरीब बच्चों के लिए नि:शुल्क स्वास्थ्य व दंत चिकित्सा शिविर के आयोजन से भी सैकड़ों बच्चों को लाभ पहुंचाया गया।

मिल चुके हैं कई सम्मान

समाजसेवा के क्षेत्र में बेहतर उपलब्धि के लिए विनीता छाबड़ा को लायनेस क्लब के दर्जनों अवार्ड के साथ ही कई महत्वपूर्ण सम्मान से भी नवाजा गया है। इसमें 2006 में मिले आएएमए गांधी धाम अवार्ड व 2011 में समाज रत्न सम्मान प्रमुख हैं।

महिलाओं के प्रति सोच बदलने की जरूरत

विनीता का कहना है कि भले ही हम आधुनिक युग में रह रहे हों, लेकिन लोगों की महिलाओं के प्रति सोच अभी भी पुरानी है। जरूरत है उनकी सोच बदलने और शिक्षा में नैतिकता को बढ़ावा देने की। तभी स्थिति में बदलाव संभव है।

आत्मनिर्भरता की मिसाल बनीं सैयदा नसरीन

सचिन त्रिवेदी
पूर्वी दिल्ली

कहता है कि महिलाएं कमजोर होती हैं, जबकि नारी शक्ति ने समय समय पर अपने सराहनीय कार्यों से इस कथन को गलत साबित किया है। पूर्वी दिल्ली की जगतपुरी निवासी सैयदा नसरीन ने भी कुछ इसी तरह की मिसाल पेश की है। 31 वर्षीय सैयदा नसरीन ई-रिक्शा चलाकर चार बच्चों की परवरिश कर रही हैं। नसरीन का कहना है कि पति शेख मुशर्रफ की नौकरी चली जाने से उनके सामने कठिन परिस्थितियां उत्पन्न हो गई थीं। ऐसे में नसरीन ने सिलाई का काम कर कमाई से पति को ई-रिक्शा खरीदकर दिया, मगर इसी दौरान पति को नशे की लत लग गई। ऐसे में बच्चों की परवरिश के लिए नसरीन खुद ई-रिक्शा लेकर सड़क पर निकल गईं।

अपनी कमाई से दिलाया पति को ई-रिक्शा : मूलरूप से हैदराबाद के शाहीन नगर की रहने वाली सैयदा नसरीन बताती हैं कि 1 जनवरी 2001 को उनकी शादी बंगाल के आसनसोल निवासी शेख मुशर्रफ से हुई। दोनों जगतपुरी इलाके में किराये के मकान में रहने लगे। शेख मुशर्रफ एक निजी कंपनी में कपड़ों के निर्यात का कार्य जांचने का काम करते थे और नसरीन भी नोएडा में सिलाई का काम करती थीं। नौकरी छूटने पर शेख मुशर्रफ ने कुछ समय तक एक होटल में वेटर के तौर पर काम किया। इसी बीच उसे नशे की लत लग गई और नौकरी भी चली गई। परिवार का गुजारा करने को लेकर भी चुनौती आ खड़ी हुई। इस स्थिति में नसरीन ने सिलाई के कार्य के जरिये जोड़े हुए अपने पैसों से पति को नया ई-रिक्शा खरीदकर दिया, मगर नशे की चपेट में आने से उनके पति यह काम भी नहीं कर सके।

आधे दिन में 500 रुपये की पहली कमाई : पति के काम नहीं करने की बातों को सोचकर पहले तो नसरीन बहुत परेशान हुईं, मगर दो दिन बाद जब वह अपने बच्चों को स्कूल छोड़ने निकलीं तो उसने पहली बार ई रिक्शा चलाने की कोशिश की। इस दौरान नसरीन खुद ई-रिक्शा लेकर बच्चों को स्कूल छोड़ने पहुंचीं। दोपहर तक नसरीन ने ई-रिक्शे पर सवारियां ढोईं और फिर बच्चों को स्कूल से लेकर घर लौटीं। उस समय उन्होंने आधे दिन में पहली बार 500 रुपये कमाए, जिसे देखकर उनके पति हैरान रह गए। ई-रिक्शा चलाने के फैसले पर उनकी मां ने ऐसा करने से मना किया, मगर उन्होंने बच्चों की अच्छी पढ़ाई का हवाला देते हुए सब ठीक हो जाने का भरोसा दिलाया।

विपरीत समय में संभाली परिवार की जिम्मेदारी

ई-रिक्शा चलाकर कर रहीं बच्चों की परवरिश

सैयदा नसरीन ई-रिक्शा चलाकर करती हैं बच्चों की परवरिश। जागरण

ई-रिक्शा चलाने को चुना सुरक्षित स्थान

नसरीन ने बताया कि एक महिला के तौर पर ई रिक्शा चलाना उनके लिए बहुत बड़ा फैसला था, मगर बच्चों का भविष्य अंधकार की ओर जाते देख उन्होंने मजबूरी में यह फैसला लिया। नसरीन का कहना है कि शुरुआत मे जब उन्होंने ई रिक्शा चलाना शुरू किया तो उन्हे खुद पुरुष ई रिक्शा चालक परेशान करने लगे। इसके अलावा उन्हें कई तरह की अनहोनी का डर सताने लगा। ऐसे में उन्होंने सीए इंस्टीट्यूट, कड़कड़डूमा कोर्ट एवं मेट्रो स्टेशन जैसे सुरक्षित स्थानों पर ई रिक्शा चलाने का फैसला लिया। इस दौरान उन्हें दिल्ली पुलिस की ओर से सुरक्षा का आश्वासन भी मिला।

जारी है संघर्ष

नसरीन बताती हैं कि शुरुआत में उन्हें थोड़ी झिझक हुई, मगर धीरे-धीरे उनकी हिम्मत बढ़ी और वह नियमित रूप से ई रिक्शा चलाने लगीं। मुश्किलों ने यहां भी उनका साथ नहीं छोड़ा और छह माह बाद उनका नया ई रिक्शा चोरी हो गया, जिसकी किश्ते भी पूरी नहीं हो पाई थीं। इतना सब होने के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और फिर एक पुराना ई रिक्शा किश्तों पर लिया। इस दौरान उन्होंने नए और पुराने ई रिक्शे की किश्ते भी भरीं। उनका कहना है कि सड़क पर ई रिक्शा चलाने और चार बच्चों की परवरिश करने में उसे कठिनाइयां तो बहुत हुईं, मगर धीरे- धीरे उम्मीद भी बढ़ती गईं। हालांकि बड़े बेटे को उन्होंने उसकी नानी के पास हैदराबाद भेज दिया। बाकी तीनों बच्चों की परवरिश के लिए आज भी उनका संघर्ष जारी है। नसरीन का कहना है कि वे तो सिर्फ 10वीं तक की पढ़ाई कर सकीं, मगर वे चाहती हैं कि उनके बच्चे अच्छी शिक्षा हासिल कर सम्मान से जीवन जी सकें।

हर बाधा के पार है अनुराधा शर्मा

महिलाओं के लिए विशेषतौर से आनंद विहार से लखनऊ तक शुरू हुई अंतरराज्यीय बस सेवा पिंक एक्सप्रेस।

जासं, *पूर्वी दिल्ली*

महिलाओं के सहयोग के लिए महिलाओं को ही आगे आना होगा। सवाल उनकी अस्मिता और सुरक्षा का है। अगर महिलाएं संगठित हो जाएं और हिम्मत व समझदारी से काम लें तो महिला सुरक्षा से जुड़ी चिंताओं में निश्चित रूप से कमी आएगी। हमने अपनी जीवनशैली बदल ली। हम नए माहौल में ढल गए, क्योंकि यह आज की जरूरत है। फिर आज के हिसाब से खुद को सशक्त करने में भला क्या बुराई है? यह जज्बा अंतरराज्यीय सेवा पिंक एक्सप्रेस की महिला परिचालक अनुराधा शर्मा का है।

बुलंदशहर के संपन्न परिवार से है नाता : बुलंदशहर की इस बेटी ने इस पेशे को महज इसलिए अपनाया, क्योंकि सवाल महिलाओं का है। पिता पेशे से दंत चिकित्सक हैं और भाई भी पिता के ही नक्शे कदम पर आगे बढ़ रहा है। मां गृहिणी हैं, लेकिन पूरे परिवार का समर्थन और स्नेह अनुराधा को प्राप्त है। बतौर अनुराधा सुरक्षा और आत्मबल के बीच गहरा नाता है। वे कहती हैं कि अगर महिला मन से मजबूत हो और आत्मविश्वास हो तो मुश्किल बाधाओं को भी पार करने में वक्त नहीं लगता।

चुनौतियों को मात देने की विशेष तैयारी : अनुराधा का कहना है कि जब से उन्होंने होश संभाला है तब से सामाजिक चुनौतियों को महसूस किया। यही कारण है कि वे आज शारीरिक और मानसिक तौर पर पुरुषों के मुकाबले में कहीं कम नहीं हैं। स्कूल स्तर पर अनुराधा ने एनसीसी की 39 बटालियन से जुड़ कर प्रशिक्षण लिया। इस दौरान वे बटालियन के श्रेष्ठ निशानेबाजों में भी शुमार रहीं। अनुराधा के मुताबिक यह सब करने से उनके मन में गजब का उत्साह पैदा होता था। वह एक प्रतिष्ठित संस्थान से पत्राचार माध्यम से प्रबंधन की भी पढ़ाई कर रही हैं।

महिलाओं का करें सहयोग

अनुराधा शर्मा ने महिलाओं के सामने मौजूद सामाजिक चुनौतियों के बारे मे पूछे गए एक सवाल का बेबाकी से जवाब दिया। उन्होंने कहा कि घरेलू हिंसा, महिलाओं के साथ अभद्रता, उनके साथ होने वाली हिंसा को नियंत्रित किया जा सकता है। घर में अगर मां और बहन के स्तर पर विरोध हो तो घरेलू हिंसा को मुंहतोड़ जवाब मिल सकता है। महिलाओं के साथ होने वाली अभद्रता जैसी घटनाओं पर कैंडल जलाकर विरोध करने के साथ अगर मौके पर संगठित रवैया अपनाया जाए तो असामाजिक तत्वों के लिए यह करारा तमाचा साबित होगा। उन्होंने कहा कि हर चुनौतियों के मुकाबले को लेकर घरों में बेटियों को तैयार किया जाए। माता-पिता चाहे तो इसमे बड़ी भूमिका अदा कर सकते हैं। वह कहती हैं, कुछ भी गलत लगे तो उसका विरोध अवश्य करें।

पंख मिले, भरी उड़ान

कांस्य पदक के साथ थोडम कल्पना।

अरविंद कुमार द्विवेदी
दक्षिणी दिल्ली

थोडम कल्पना (25) को बचपन से खेलने का शौक रहा। लेकिन घर की आर्थिक स्थिति, गांव में लड़कियों के लिए पढ़ाई-लिखाई के लिए अनुकूल माहौल का अभाव जैसी कई समस्याएं उनकी कल्पना को मूर्त रूप लेने से रोक रही थीं। तभी वर्ष 1998 में उनकी सहेली विजयलक्ष्मी उन्हें अपने एकेडमी लेकर गई जहां वह जूडो सीख रही थी। घरवालों को बिना बताए कल्पना ने भी वहीं एडमिशन ले लिया। हालांकि बाद में इस बात को लेकर काफी विवाद हुआ, लेकिन यहीं से कामयाबी का रास्ता भी खुल गया।

थोडम कल्पना बताती हैं कि एकेडमी में दाखिला लेने के बाद घरवालों को बताने की हिम्मत न हुई। छह माह बीत गए। इस दौरान जूडो की सब जूनियर नेशनल प्रतियोगिता में उनका चयन हो गया। उन्होंने घर में बताया तो तूफान खड़ा हो गया। अकेली लड़की कैसे जाएगी बाहर खेलने। उसका ख्याल कौन रखेगा। लड़की है, पढ़ाई कर और घर के काम कर जैसी रटी-रटाई बातें। यह सब सुनकर उनकी दादी की आंखें भर आईं। दादी ने फैसला किया कि कल्पना नेशनल खेलेगी। पंख मिले और कल्पना ने भरी उड़ान। कल्पना सिल्वर मेडल जीतकर लौटी, लेकिन कल्पना के गांव व घर-परिवार के लिए वह सिल्वर मेडल किसी विश्वकप से कम न था। घर-बाहर सबने उसे सिर आंखों पर बिठाया। यहीं से रास्ता खुल गया। आज कल्पना देश-विदेश में अपना और गांव का नाम रोशन कर रही हैं। मणिपुर निवासी कल्पना ने वर्ष 2009 में आइटीबीपी में कांस्टेबल के पद पर ज्वाइन किया था। अभी वह 22वीं बटालियन में बतौर एएसआई तैनात हैं। आजकल वह रोजाना आठ घंटे अभ्यास करती हैं। पिछले छह-सात वर्षों में दर्जनों राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताएं खेल चुकी हैं।

थोडम कल्पना की पारिवारिक पृष्ठभूमि खेलों के नहीं थी अनुकूल

एक बार मौका मिला तो कामयाबी के झंडे गाड़ दिए

> विपरीत परिस्थितियों के चलते अगर अपनी इच्छाओं को दबा लिया होता तो शायद आज मुझे देश से इतना प्यार न मिलता। महिला हो या पुरुष, आपको वही करना चाहिए जो आपका दिल कहे। जिंदगी की मुश्किलें कभी कम नहीं होतीं, उन्हीं के बीच में हमें रास्ता बनाना होता है। मेरी तरह कोई भी यह रास्ता बना सकता है। बस लगन हो। **-थोडम कल्पना**

उपलब्धियां

- वर्ष **2010** कॉमनवेल्थ चैंपियनशिप में गोल्ड मेडल।
- वर्ष **2010** वीमेन वर्ल्ड कप में कांस्य
- वर्ष **2013** ग्रैंड प्रिक्स में कांस्य पदक।
- वर्ष **2013** वर्ल्ड पुलिस गेम्स- में गोल्ड।
- वर्ष **2014** लूसोफोनिया गेम्स में गोल्ड।
- वर्ष **2014** कॉमनेल्थ गेम्स में कांस्य।
- वर्ष **2015** पुलिस गेम्स में गोल्ड।
- वर्ष **2015** नेशनल गेम्स में सिल्वर।